चित्रकला में संगीत कला का समन्वय

रश्मि आर्य
पी0 एच0 डी0
रिसर्च स्कॉलर, चित्रकला विभाग

कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिन्हें कला प्राकृतिक प्रतिभा के साथ ईश्वरीय उपहार के रूप में मिलती है। जो सभी को नहीं मिलती। ऐसे ही व्यक्तित्व हैं ''तिलक गिताई''। इनका परिचय यह है कि इनके दादा जी बीकानेर के दरबार में कत्थक नृर्तक थे। यही कला इनके पिताजी को विरासत में मिली। जाति से यह एक बनिया समिति के थे और व्यवसायिक रूप से यह जौहरी थे। किन्तु संगीत में इनकी अत्यधिक रूचि थी। इन्होंने शौकिया तौर पर संगीत विद्या को इतना सीखा की उन्हें संगीत में महारत हासिल हो गई। वह बीकानेर के राजा के दरबार में शाही संगीतकार रहे। अनेकों ठुमरियॉ बनाते, गाते व बजाते थे। यही सब तिलक को पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिला वह अपने दादा जी के कत्थक विद्या व पिताजी की संगीत विद्या से गहन रूप से प्रभावित थे। तिलक को चित्रकला में रूचि थी इनकी शिक्षा भी चित्रकला के क्षेत्र में हुई। संगीत का प्रभाव तिलक की विशिष्ट कृति ''रागमाला – दि मिसिंग लिंक'' में विशेष रूप से देखने को मिलती है। जिसके लिये यह पदमश्री सम्मान से सम्मानित भी किये जा चुके है। रागमाला चित्रों में गिताई ने संगीत में चित्रों के साथ जीवन को उतारा है। रागमाला का अर्थ है रागों की श्रंखला या माला इसमें लघु चित्रों को एक व्यवस्थित रूप में दर्शाया जाता है। गिताई ने इसके अर्न्तगत चित्रकला माध्यम से प्रत्येक राग को मोती की तरह पिरोया है। संस्कृत में इसका अर्थ '' रागों को दर्शाने वाला लघु चित्रों का सेट'' से माना जाता है। यह एक विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित होता है। जो श्रंखला दर श्रंखला सुनियोजित किया जाता है। इसका क्रम इस प्रकार लगाया जाता है, साधन–प्रकार–प्रणाली। अर्थात् संगीत साधनाा के प्रकार व प्रणालियों की श्रंखला है। जिसने 400 से अधिक वर्षो के एक अन्तराल को पुनः सुनियोजित कर दिखाया है। जो कलाकारों व संरक्षकों को मोहित किये हुए है। रागमाला पेन्टिंग रागों को सचित्र वर्णन प्रदान करती है। गिताई ने पूर्व रागमाला का अध्ययन किया और ज्ञात हुआ कि वह रागों के पारस्परिक सम्बन्ध में नहीं हैं उन्हें रागमाला के चित्रों में राग में कोई सम्बन्ध नहीं दिखा। इसी के अभाव को उन्होंने पुनः रागमाला को चित्रण की सहायता से दर्शाया। अर्थात कविताओं या संगीत में उल्लेखित चित्रों के साथ रागों का कोई सम्बन्ध नहीं था। इसमें रागों के साथ भावनात्मक जुडाव का अभाव था। तिलक कहते है कि, ''यह हमारे 300 साल पुराने कला रूप का आश्चर्यजनक शोध था। मैं इस अंतर को मिटा देना चाहता था। इसलिये मैने पदम् भूषण और अध्यक्षता प्राप्त करने वाले संगीत संगीतकारों के साथ मिलकर इस पर लगभग 10 साल काम किया''। रागमाला को चित्रित करने में 10 वर्ष का कार्यकाल लगा। यह एक पुस्तक के रूप में है। इसमे प्रत्येक राग के साथ शब्दों को लिखा गया है। उनके गायन व वादन के समय को ध्यान में रखकर ही उन्हें चित्रित किया गया है। जो किशनगढ़ शैली पर आधारित है। इन चित्रों को हस्त निर्मित कागज पर बनाया गया है। इन पर जो रंग लगे हैं वह भी हस्तनिर्मित है। रंगों की कुछ विशेष तानों को बनाने में एक वर्ष तक का समय भी लगा है। खनिज, पत्थर और धातुओं की सहायता से रंगो का निर्माण किया गया है। कुछ राग चित्रों को बनाने में छः माह तक का कार्यकाल लगा है। यह देखेन में अविस्मरणीय प्रतीत होते हैं। ये अमेरिकी प्रोफेसर क्लास ऐबलिंग द्वारा प्रकाशित रागमाला पेंटिंग की पुस्तक है। इसका एक सेट या प्रतिलिपि जीनिवा के संग्रहालय में संग्रहीत है जो भारतीय कला परम्परा के लिये गौरव की बात है।

इस रागमाला में प्रत्येक चित्राकृति एक–एक राग पर आधारित है। संगीतकला साधना में रागों के गायन समय को विशिष्टता दी गई है। तथा प्रत्येक राग किसी समय विशेष पर ही गाया व बजाया जाता है। इस रागमाला में पृथक–पृथक रागों का समावेश है। कुछ राग रात्रि के पृथम चरण, द्वितीय चरण या अधूर्यरात्रि में गाये व बजाये जाते हैं। जो इन रागों की अनिवार्यता है। तिलक की इन पेंटिंगस में रागों को मूर्त रूप दिया गया है। तथा समस्त वातावरण की भी राग गायन अवस्था के अनुरूप ही अंकित किया गया है। रेखांकन के भांति रंगों का चयन भी भलीभांति किया गया है। प्रत्येक राग से कुछ भाव प्रकट होते हैं इन भावों से जुडें कुछ प्रतीकात्मक वर्ण या रंग होते हैं। जिन्हें तिलक ने पहचानकर रागों के चित्रण में समावेश किया है। तिलक कहते हैं कि रागों और चित्रण के बीच यही परस्परता का आभाव उन्हें पूर्व रागमालाओं में अनुभव हुआ। जिस आभाव को मिटा देने के उद्येश्य से ही उन्होंने लगभग 400 साल के अन्तराल को पार किया है। इन रागमालाओं की प्रियदर्शनी स्वीटजर लैण्ड की एक कलासंग्रहालय में लगाई गई। वहॉ प्रत्येक राग को बजाकर प्रस्तुत किया गया। प्रत्येक रागमाला चित्रण एक विशिष्ट राग को सम्बोधित करता है। उसके गायन समय को विस्तार पूर्वक बताते हुऐ कुछ पंक्तियाँ गायी गई व बजाई गई। जिससे वही भाव समप्रेषित हो रहे थे जो रागमाला के चित्रण को देखकर अुनभव किये जा रहे थे। यह दृश्य अपने आप में एक अनूठा दृश्य था। तिलक कहते हैं कि ''ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे भारतीय संगीत कला व चित्रकला का संगम हो रहा हो''।

इस दृष्टि से यह रागमाला स्वंय में एक शौध है जिसने पुरानी रागमाला चित्रणों में विद्यमान अभाव को पुनः चित्रित होकर दूर किया है।

इन रागमाला चित्रों को बनाने में लगभग 10 वर्ष का कार्यकाल लगा है, इन चित्रों को बनाने के लिये कलाकार ने संगीत विशेषज्ञों व संगीतकला

में पदमश्री सम्मान की अध्यक्षता हासिल किये हुये कलाकारों के साथ जुड़कर प्रत्येक–प्रत्येक राग पर विशेष रूप से विस्तारपूर्वक कार्य किया। उन्हें वह हजारों बार गाते व बजाते थे। तथा उनसे उत्पन्न भावों को अनुभव कर जो भी प्रतीकात्मक भाव उत्पन्न होते थे उन्हें रंगों व तानों की सहायता से चित्र पटल पर उतारते थे। चित्रों की पृष्ठभूमि भी कलाकार ने स्वंय निर्मित की है। उन्होंने हस्तनिर्मित कागज को तय दर तय लगाकर एक उचित पृष्ठभूमि तैयार की जो इन चित्रों की आधार शिला बनी है। तिलक कहते हैं कि उन्हें, ''पृथम राष्ट्रीय पुरस्कार आइवरी पर लघु चित्रण के क्षेत्र में मिला था। जो कि हाथी दॉत द्वारा तैयार की जाती थी। और उसका मूल्य भी उच्चदर का होता था। समय के साथ सरकार ने हाथी दाँत पर प्रतिबन्ध लगा दिया, तिलक स्वंय भी राष्ट्रीय के क्षेत्र में समर्पित हैं व वनजीवन के संरक्षण में सहायक सभी कानूनों को प्राथमिकता देते हैं। उनका कहना था कि यदि यह रागमाला मैने उस समय बनाई होती जब 'आइवरी' पर प्रतिबन्ध नहीं था तो यह रागमाला पृष्ठभूमि के क्षेत्र में भी एक विशिष्ट कृति होती क्योंकि वे इसे 'हाथी दाँत' पर ही निर्मित करते। किन्तु इनकी यह कृति भी विश्व विख्यात है। तथा अनेको सौन्दर्य के प्रमाण चिहन स्वंय में समेटे हुये है। पृष्ठभूमि या धरातल के पश्चात् रंगों व तानों की ओर बढ़ते हैं तो देखते हैं कि प्रत्येक रंग खनिज पदार्थों के द्वारा ही स्वयं निर्मित किये हैं। जैसे खड़िया, पीली मिटटी, हरे पत्ते, हल्दी, इत्यादि। भिन्न–भिन्न प्राकृतिक खनिज के द्वारा रंगों का निर्माण किया गया। इसमें रगों के सर्वपृथम प्राथमिक रंग तैयार किये। तत्पश्चात् द्वितिय रंग तैयार किये गये। तत्पश्चात् विरोधाभास रंगों को बनाया गया। रंगों के विभिन्न आयामों के बाद इनकी तानों को 'टिन्ट व शेड़' से बनाया जाता है। जिसे प्रकाश व छाया की सहायता से भी किया जाता है। जिसकी सहायता से रंगों की हल्की तानों व गहरी तानों का निर्माण किया जाता है।

इन सभी रंगों के साथ कुछ विशेष प्रकार के रंगों का निर्माण किया। जिनमें कुछ शेड को बनाने में लगभग 1 वर्ष तक का समय भी लगा है। जो एक अदभुद अनुभव है। रंगों को ऋतुओं के अनुसार बनाया जाता है जिसके कारण वातावरण का पूर्ण प्रभाव इन रंगों पर पड़ता है। जैसे कुछ घण्टे की धूंप व कुछ घण्टे की छाँव या फिर सम्पूर्ण रूप से छाया में रखकर रंगों को बनाया गया है। जिसके फलस्वरूप कुछ विशेष रंग तैयार हुऐ। जिनका भली प्रकार इन रागमाला चित्रों में प्रयोग किया गया है। इनमें तेज रंगों का प्रयोग किया है। शैली के आधार पर इन चित्रों का विश्लेषण किया जाये तो यह चित्र किशन गढ़ शैली पर आधारित है। इन चित्रों की शैली के सम्बन्ध में कहा है कि, ''तिलक का किशनगढ़ उसका किशनगढ़ है'' अर्थात् तिलक ने स्वयं के अर्न्तमन में जो किशनगढ़ की छवि विद्यमान है उसे ही शैली मानकर चित्रों में उतारा है। इन चित्रों में चित्रण विषय की बात करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि इन चित्रों में प्रत्येक चरित्र की एक रंग, मनोदशा एक नायक व नायिका की कहानी का वर्णन करते हुये चित्रित किया गया है। यह मौसम दिन व रात के समय को भी स्पष्ट करता है। जिसमें एक विशेष राग गाया जाता है और अन्त में यह चित्र भी राग से जुडे विशिष्ट हिन्दु देवता को दर्शाते हैं। चित्र में राग को नायक के रूप में या देवता के रूप में दर्शाया है। चित्रों में न केवल रागों का वर्णन है बल्कि उनकी पत्नियों, रागनियों उनके कंई पुत्रों व पुत्रियों का भी चित्रण है।

इस रागमाला चित्रों में छः सिद्धान्त हैं राग भैरव, दिपिका, श्री मालकोस, मेघा और राग हिंडोला है। और यह वर्ष के छः सत्रों के अतिरिक्त गाये जाने वाले हैं। जो मानसून की शुरुआत में ग्रीष्म बसन्त, पतझड, व सर्दी को स्वचालित करते हैं।

संगीत रतनाकार भारतीय रागों को वर्गीकरण पर 12 वी शताब्दी का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। जिसमें पहली बार प्रत्येक राग के पीठा सीन देवता का उल्लेख है। 14 वी शताब्दी से पूर्व उनका वर्णन संस्कृत में संक्षिप्त रूप में ध्यान, चिन्तन, के लिये किया गया था। तत्पश्चात् इसे चित्रकला की एक श्रंखला में चित्रित किया गया। जिसे राग चित्रकला कहा जाता है। तत्पश्चात् रागमाला के कुछ सर्वश्रेष्ठ उपलब्ध कार्य 16 वी शताब्दी के हैं, जब चित्रकला को यह रूप शाही संरक्षण के तहत विकसित हुआ था।

रागमाला का इतिहास संक्षिप्त इतिहास नहीं है। और राग स्वंय में पवित्रता की अनुभूति रखते हैं राग चित्रों में भी यचह अनुभव भली प्रकार किया जाता है। रागमाला चित्रण संगीतकला साधना को एक मूर्त आयाम देती है। व उसके परस्पर सम्बन्ध को दर्शाती है। जो भारतीय धरोहर के सम्मान व गौरव की बात है। सुप्रसिद्ध कलाकृतियों में श्त्हंउंसं . जैम डपेपदह स्पदाश का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इस रागमाला के लघुचित्रों की श्रंखला के लिये कलाकार तिलक को 'पदमश्री' से सम्मानित किया जा चुका है।

निष्कर्ष

अतः संगीतकला साधना व चित्रकला के संगम को हम इस रागमाला चित्रों के माध्यम से देख सकते हैं चित्रों को देखकर ही प्रत्येक राग में उपस्थित भाव–सम्भाव उत्पन्न होने लगते हैं। गिताई ने अपनी पैंतृक कला को चित्रकला के माध्यम से जीवित रखा। उन्होंने चित्रों में भी संगीत गायन व वादन को अच्छी तरह से गूंथ दिया। यह कृति उनके दादा जी की संगीत साधना का ही आर्शिवाद है। जिसे उन्होंने सामाजिक रूप से प्रस्तुत किया है। ओर समर्पण भाव से कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। अर्थात् हम कह सकते हैं कि कला साधना किसी भी रूप में की जाये वह आनन्दानुभूति ही प्रदान करती है। वह समस्त रूप से सुखद ही होती है। रागमाला चित्रों की वह श्रंखला है। जिसमें प्रत्येक राग एक मोती की तरह पिरोया गया है। इन चित्रों में मूर्तकला व अमूर्त कला एक दूसरे की पूरक प्रतीत होती है। अतः एक के अभाव में दूसरी अपूर्ण है।

संदर्भ :–वर्मा डा0 महेनद्र, भारतीय चित्रकला की परम्परा–भारतीय कला प्रकाशन, नई दिल्ली।

क्लास ऐबलिंग '' रागमाला–द मिसिंग लिंक'', जयपुर प्रकाशन।